

‘रामचरितमानस में रूणित रोगों की व्याख्या’ एक : समीक्षात्मक-विश्लेषण

प्राप्ति: 16.05.2022
स्वीकृत: 04.06.2022

30

डॉ० विनय कुमार शर्मा

एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी, वाणिज्य विभाग
फैकल्टी ऑफ कॉमर्स
राजकीय रजा पी०जी० कॉलेज, रामपुर
ईमेल: vinaisharma2014@gmail.com

सारांश

रामचरितमानस एक सूत्रधारी कम्पनी के समान है जिसमें अनेकानेक आदर्शों एवं नैतिकता का समावेश है। तुलसीदास जी को भारतीय सद्ग्रन्थों का अच्छा ज्ञान था।

वे सरल हिन्दी, संस्कृत-भाषा व व्याकरण के प्रकाण्ड पण्डित थे। 16वीं शताब्दी में समाज इतना शिक्षित एवं जाग्रत नहीं था जितना कि आज है। रामचरित मानस के सातों काण्डों में हरि-स्मरण के विकास एवं विस्तार की बाहुल्यता है। तुलसी की सोच अनूठी एवं निराली थी। अतः उन्होंने उत्तर काण्ड में गरुड़ और काक-भुशुण्ड जी के सुसंवाद द्वारा मानव-रोगों तथा मनुष्यों के अवगुणों का संक्षेप में विश्लेषण किया है। तुलसी एक आत्मानुभूति वाले कवि थे। अतः उन्होंने यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि मानवीय अवगुणों तथा मानस-रोगों के बीच धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया जाता है। मानस-रोगों के निवारणार्थ कच्चे तथा पक्के उपाय भी बतलाये हैं। पक्के उपचार के उपाय मानस-रोगों को कम करने में मनुष्य की बहुत बड़ी सहायता करते हैं। तुलसीदास जी की राम अपार श्रद्धा, स्नेह, विश्वास व आस्था थी। उन्हें राम की भक्ति सबसे ज्यादा प्यारी थी। राम: नवामि, नवामि, नवामि।

प्रस्तावना

तुलसीदास जी संस्कृत-भाषा तथा व्याकरण के प्रबल विज्ञानी थे। उन्हें भारतीय सद्ग्रन्थों का अच्छा एवं गहरा ज्ञान था। वे ब्रह्मसूत्रों, चारों वेदों, अठारह पुराण, गीता, उपनिषदों, स्मृतियों में छिपे हुए गूढ़-ज्ञान के पुरोधा थे। आपने श्री रामचरितमानस की रचना सभी भारतीय सद्ग्रन्थों के अध्ययन के बाद ही की थी। उन्होंने स्वयं भी स्वीकार्य किया है कि :-

नाना पुराणा निगमागम सम्वतं यद् स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा, सम्पूर्ण महाकाव्य सत्यं शिवं सुन्दरम से आच्छादित है। आदर्शों, सुसंवादों, सूक्तियों तथा राम के उत्कर्षों से सुगन्धित है। अतः गीता और रामचरित मानस आज भारत के ही नहीं अपितु विश्व के कोने-कोने में ज्ञान का प्रसार एवं प्रचार कर रहे हैं। रामचरितमानस के प्रत्येक काण्ड में सुसंवादों की प्रचुरता है। अतः सुसंवाद का सही-सही अर्थ जानना आवश्यक है। सु का अर्थ है सुमधुर वाणी एवं व्यवहार, सं का

अर्थ है संयत वाणी एवं व्यवहार, वा का अर्थ है वाणी तथा व्यवहार की वाकपटुता एवं वार्तालाप-शैली, द का अर्थ है दरिद्रता रहित वाणी एवं व्यवहार।

अतः सुसंवाद या वार्तालाप सदैव सुमधुर वाणी एवं व्यवहार से ओत-प्रोत होना चाहिए। तुलसीदास जी ने मानस-रोगों की व्याख्या उत्तरकाण्ड में गरुड़ और काक भुशुण्ड जी के सुसंवाद द्वारा की है। गरुड़ जी काक भुशुण्ड जी से सात प्रश्न पूछते हैं। उनमें अन्तिम प्रश्न था कि मनुष्य बीमार क्यों, कब और कैसे पड़ता है। कृपया अव मुझे संक्षेप में मानस-रोगों के बारे में बतलाइये। काक भुशुण्ड जी कहते हैं कि:-

सुनहु तात अब मानस-रोगा
तिन तें दुःख पावें सब लोगा।

मुख्य-मुख्य मानस रोग वैसे तो मानव शरीर सब योनियों में श्रेष्ठ माना गया है। किन्तु फिर भी यह शरीर यदा-कदा मानस रोगों से ग्रसित रहता है। तुलसीदास जी क्या एम०बी०बी०एस० थे क्या वे बी०ए०एम०एस० थे? यह प्रश्न हर पाठक के मन में स्वाभाविक उठता है। उनका यह दृढ़ आत्मविश्वास था कि वृद्धावस्था में मनुष्य के अवगुण ही मानस-रोग बन जाते हैं। यदि मनुष्य अपने अवगुणों को विकसित न होने दे और नियन्त्रित कर ले तो मनुष्य अमरत्वता प्राप्त कर सकता है। आत्मज्ञानी कबीरदास जी ने अमरता के सूत्र का आविष्कार किया था। कबीरदास जी का एक पद है कि:-

जब गगन गुफा से अमृत झरै-टेक,
बिनु बाजा झंकार उठे समझि परे जब ध्यान धरै,
काल कराल निकट नहीं आवे काम, क्रोध मद लोभ जरै
युग-युग की अब प्यास बुझानी कल्मस कर्म और पास तरै,
कहत कबीर सुनो भाई साधौ "अमर होय कवहुँ न मरै"

कबीरदास जी यह मानते थे कि आत्मा अमर है शरीर अमर नहीं है। गीता के अनुसार भी आत्मा अमर है। आत्मा को भयंकर हथियार भी टुकड़े-टुकड़े नहीं कर सकते हैं। अग्नि जला नहीं सकती है, हवा सुखा नहीं सकती है और पानी गला नहीं सकता है। स्रोतः गीता से उद्धृत।

सभी आत्मज्ञानियों की वाणी में पूर्ण एकता है।

काक भुशुण्ड जी गरुड़ जी से कहते हैं कि :-

सुनहु तात अब मानस-रोगा
तिन्ह तें दुःख पावहिं सब लोगा-1
मोह सकल व्याधिन्ह का मूला
तिन्ह तें पुनि उपजें बहु शूला-2
काम वात कफ लोभ अपार
क्रोध पित्त नित छाती जारा-3
प्रीति करें जो तीनों भाई
उपजे सन्नपात दुःखदाई-4

ममता दाद कण्ड ईर्ष्याई
हरष-विषाद गरह बहुताई-5
पर सुख देखि जरे जो प्रानी
कुष्ट दुष्टता मन कुटिलानी-6
अहंकार अति दुःखद डमरूआ
दम्भ कपट मद मान नेहरूआ-7
तृष्णा उदरवृद्धि अति भारी
त्रिविध ऐषरण तरुण तिजारी-8
जग विधि ज्वर मत्सर अविवेका
कहँ लागि कहों कुरोग अनेका-9
एक व्याधिवस नर मरहिं ए असाधि बहुव्याधि
जीर्णवस्था में उठे डंगे व्याधि पै व्याधि-10

स्रोत रामचरितमानस से उद्धृत है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार वितृष्णा, यौवन, ज्वर, ममता, ढाह, ईर्ष्या, मत्सर आदि अवगुण मानस-रोगों के प्रवर्तक, उन्नायक एवं जन्मदाता माने जाते हैं। ये सब अवगुण शरीर, आत्मा, मन, बुद्धि तथा विवेक को हिलाने वाले या कष्टदायक होते हैं। ये अवगुण मनुष्य के चतुष्टय को विकृत कर देते हैं।

मानस रोगों के निवारण के उपाय

(अ) कच्चे एवं दुर्बल उपाय

जप, तप नियम, ज्ञान, यज्ञ, दान आदि सैकड़ों उपाय इन मानस-रोगों से बचने के लिए भारतीय सद्ग्रन्थों में उल्लेखित हैं। किन्तु मानस-रोग इन उपायों द्वारा दूर या नष्ट नहीं होते हैं। ये सब उपाय नकली हैं और साधना स्थल पर झाड़ू, पोंछा और बर्तन मॉजने के समान हैं। चारों वेदों में कुल 20516 मन्त्र हैं। ये सभी मन्त्र बतलाते हैं कि मनुष्यों के अवगुण ही वृद्धावस्था में जाकर मानस-रोगों से संघर्ष का कारण बनते हैं क्योंकि जीर्णावस्था में मानस-रोगों से संघर्ष करने की क्षमता एवं शक्ति कम हो जाती है। शरीर दुर्बल होने लगता है। आज भारत में कुल जनसंख्या का दस प्रतिशत बुजुर्ग हैं। इनकी भलाई, कल्याण और देखभाल की जिम्मेदारी सत्ताधारी शासन की है। बीजेपी सरकार चिकित्सा ढाँचे को सुधारने का प्रयास तो कर रही है किन्तु स्वास्थ्य क्षेत्र में अभी अभीष्ट सफलताएँ अपेक्षित हैं।

(ब) मानस-रोग निवारण के पक्के उपाय

1. **हरि स्मरण** : तुलसीकृत रामचरित मानस के सातों काण्डों में हरि स्मरण का विकास और विस्तार करने पर बहुत जोर दिया गया है। तुलसी ने जगह-जगह पर यह उपदेश देने की चेष्टा की है कि :-

हरि भक्ति विनु कहीं सुख नाही
जीव न लहै सुख हरि प्रति कूला
राम विमुख न जीव सुख पावे

राम कृपा नासैं सब रोगा
हरि-विमुख नहीं सुख संसारा
करो राम पद पंकज नेहा

अतः राम नाम की भक्ति करो जो ज्ञान-भण्डार से भी महान व श्रेष्ठ है। राम-नाम माया से रहित है और आनन्द का शाश्वत स्रोत है।

2. सत्संगति : सत्संगति का फल मोक्ष और स्वर्ग के सुख से भी महान होता है। दीर्घकाल तक सत्संगति करने पर जीवन के चारों उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष स्वतः ही प्राप्त हो जाते हैं। सत्संगति की महिमा अपार होती है। सत्संगति वाणी एवं व्यवहार में सत्य को सींचती है, बुद्धि की जड़ता का हरण करती है, पापों को दूर करती है, चित्त को प्रसन्न रखती है और दशों दिशाओं में यश को फैलाती है। अतः सत्संगति मानव, परिवार, समाज या राष्ट्र किसका भला नहीं करती है? सत्संगति से मानस-रोग सब मिट जाते हैं। सत्संगति से ही मनुष्य की बुद्धि ज्ञान, विवेक, हृदय, वाणी, व्यवहार आदि सभी पवित्र रहते हैं।

काक भुशुन्ड जी गरुड़ से कहते हैं कि :-

विनु सत्संग विवेक न होई
राम कृपा बिनु सुलभ न सोई-1
तब ही होय सब संशय भंगा
जब बहु काल करो सत्संगा-2
शठ सुधरों सत्संगति पाई
पारस परिस कुधातु सुहाई-3
बड़े भाग्य पावे सत्संगा
बिना प्रयास होय भव भंगा-4
पुण्य-पुन्ज विनु मिलहिं न सन्ता
सत्संगति करे संसृति का अन्ता-5
बार-बसा चा माँगू हरषि देह श्री रंग
पद-सरोज अपनी भक्ति सदा करूँ सत्संग-6

कबीरदास जी भी कहते हैं कि:-

राम बुलावा भेजिया दिया कबीरा रोय
जो सुख साधु संग में सौ बैकुण्ठ न होय-7

3. विवेक : अविवेक एवं अज्ञानता को ही मानस रोगों की जननी कहा जाता है। अतः विवेकी बनो। विवेक विकसित करने का मार्ग कठिन अवश्य है परन्तु असम्भव नहीं है। तुलसीदास जी कहते हैं कि :-

नहिं दुर्लभ कछु ज्ञान समाना
कहें सन्त मुनि वेद पुराना-1
ज्ञान का पंथ कृपाण की धारा

परसि खगेस होय नहिं वारा—2
जो निर्विधन पंथ पर चलही
सो कैवस्य परम पद लहही—3

4. वैराज्ञता : हरि भक्ति और सत्संगति की भाँति वैराज्ञता से भी मानस रोग मिट जाते हैं। यह प्रश्न पाठकों के हृदय में प्रायः उठता है कि वैराज्ञता क्या है और मानस रोगों को नष्ट करने में यह मानव की सहायता कैसे करती है? वैराज्ञता की असली पहचान है इच्छा रहित जीवन—शैली। वैरागी फकीर और सन्यासी सब एक ही स्वभाव के होते हैं। सबके सब बड़े आत्मज्ञानी होते हैं और सन्तोषी भी। ये सब मायावाद से दूर रहते हैं। वैराज्ञता धीरे-धीरे आती है। कबीरदास जी ने भी फकीरी जीवन व्यतीत किया था। इसलिए तो वे कहते हैं कि :-

मन लागो, मन लागो मेरे यार फकीरी में
जो सुख पायो मैंने राम—नाम में
वह सुख नहिं अमीरी में
बुरी भली सबकी सुनि लीजो
करि गुजरान गरीवी में
प्रेमनगर में रहनि हमारी
भलि बनि आई सबरी में
हाथ कमण्डल बगल में सोटा
चारों दिसि जागीरी में
एक दिन यह तन खाक मिलेगा
फिर क्यों फिरता मगरूरी में
मन लागो मन लागो
मेरे यार फकीरी में
कहत कवीर सुनो भाई साधू
साहिव मिले गरीवी में।

स्रोतः सन्त कवीर से उद्धृत है फकीर लोग चलते फिरते तीर्थ होते हैं।
भगवान इनकी रक्षा वैसे ही करता है जैसे एक माँ अपनी सन्तान का पालन—पोषण
करती है। राम ने स्वीकारा भी है कि :-

भक्तन की मैं करूँ स्वयं रखवाली
जिमि बालक पालहिं महतारी

मानस—रोगों और मनुष्य के अवगुणों का पारस्परिक सह—सम्बन्ध

रोग सदैव दुःखदायक होते हैं। मनुष्य के लिए शरीर त्यागने या मरने के लिए एक ही मानस—रोग पर्याप्त होता है। वृद्धावस्था या जीर्णावस्था में तो कई रोग एक साथ लग जाते हैं। मानस—रोग मनुष्य के प्राण लेकर ही शान्त होते हैं। भारतीय सद्ग्रन्थों में मानस—रोग निवारण के

लिए कच्चे तथा पक्के उपचारों का उल्लेख मिलता है। हरि-स्मरण, सत्संगति, विवेक, वैराग्यता और सदाचार द्वारा ही रोगों का पक्का निवारण सम्भव है कच्चे उपायों द्वारा नहीं।

अब हम मानस-रोगों तथा मनुष्य को अवगुणों का पारस्परिक सह-सम्बन्धों की विश्लेषणात्मक समीक्षा करेंगे कि किस अवगुण से कौन सा मानस-रोग उत्पन्न होता है और उसका परिणाम क्या होता है? सांख्यिकी-शास्त्र में सह-सम्बन्ध का विस्तार से उल्लेख मिलता है। यह कथन सत्य प्रतीत होता है कि शरीर-मृत्यु और मानस-रोग के बीच धनात्मक सह-सम्बन्ध पाया जाता है।

क्र०सं०	मानस-रोग का नाम	किस अवगुण से उत्पन्न होता है
1	वात का रोग	काम-वासना से
2	पित्त का रोग	क्रोध से
3	कफ का रोग	लोभ से
4	सुन्नपात का रोग	काम, क्रोध और लोभ के मिलने से
5	व्यसन का रोग	नारी-सम्भोग से
6	दाद का रोग	ममता से
7	खुजली का रोग	ईर्ष्या से
8	कुष्ठ का रोग	मन की दुष्टता और कुटिलता से
9	घुटनों का दर्द	अहंकार से
10	नसों का दर्द	हृदय की कपटता से
11	उदर-वृद्धि का रोग	वितृष्णा से
12	मत्सर का रोग	अज्ञानता एवं अविवेक से
13	गलघोट का रोग	अत्याधिक हर्ष एवं विषाद से
14	क्षय का रोग	घृणा से
15	कोढ़ का रोग	मन की दुष्टता और हृदय की कुटिलता से
16	शरीर-मृत्यु का रोग	हरि-स्मरण या सत्संगति ना करने से

संक्षेप में, साठ वर्ष की आयु के बाद ही मानस-रोग लगना शुरू हो जाते हैं। जीर्णावस्थ या जठरपन अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते मानस-रोगों का ताँता लग जाता है। अतः मनुष्य के अवगुण ही शरीर-मृत्यु के कारण बन जाते हैं।

उपसंहार

इस शोध-लेख का प्रयोजन नयी-पीढ़ी को यह शिक्षा, अभिप्रेरणा तथा परिष्कृत विवेक देना है कि यदि नयी-पीढ़ी अपने जीवन के भविष्य को सुनहरा और उज्ज्वल बनाना चाहती है तो वे अतीत के सद्-ग्रन्थों का अनुशीलन एवं आचरण अवश्य करें तभी नयी-पीढ़ी, उसके परिवार, समाज तथा राष्ट्र का भविष्य जाज्वल्यमान हो सकता है। यह संसार तो मायावी है। वाणी और व्यवहार की मधुरता ही सच्चा तथा पक्का सदाचार है। स्वस्थ एवं स्वच्छ विवेक, वैराग्यता तथा सदाचार मानस-रोग विघटित करने में बड़ी सहायता पहुँचाते हैं। क्योंकि मानव के अवगुण ही अन्तकाल में

मानस-रोगों के प्रवर्तक, उन्नायक व जन्मदाता सिद्ध होते हैं। अतः जीवन में मानस-रोगों से मुक्ति पाने या छुटकारा पाने के लिए निवारण के पक्के उपायों को अपनाना आवश्यक है। तुलसी को राम-भक्ति में अपार श्रद्धा, स्नेह, विश्वास एवं आस्था थी। इसलिए उन्होंने रामचरितमानस की समाप्ति भी निम्न प्रकार की है :-

कामी प्यारी नारि जिमि
लोभी प्रिय निज दाम।
तिमि रघुनाथ निरन्तर
मोहि प्रिय श्री राम।।
रामः नवामि, नवामि, नवामि।

सन्दर्भ

1. तुलसीदास. रामचरित मानस।
2. प्रसाद, एस०एम०. रामचरित मानस का सन्देश. राधा स्वामी सत्संग: व्यास।
3. सेठी, शान्ति. सन्त कवीर दास "दी वीवर आफ गोड". राधा-स्वामी सत्संग: व्यास।
4. श्री भगवत गीता. गीता-प्रेस: गोरखपुर।
5. भर्तृहरि-शतक।